न्याय:
वो व्यवस्था जो प्यार मांगता है

(न्याय और मानव अधिकारों पर एक मसीही दृष्टिकोण)

JUSTICE VENTURES INTERNATIONAL

न्याय क्या है?

भविष्यवक्ता मीका कहते हैं, ***"हे मनुष्य, उसने तुझे बताया है कि क्या अच्छा है और यहोवा तुझसे क्या चाहता है – न्याय करना, दया से प्रेम रखना और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चलना।"***

तो बाइबल न्याय को कैसे परिभाषित करती है? आज की दुनिया में गरीबों और सताए हुए लोगों के लिए न्याय खोजना क्या मतलब रखता है?

न्याय का मतलब है — उस शक्ति और अधिकार का इस्तेमाल करना जिससे समाज को **ईश्वर के मानकों** के अनुसार व्यवस्थित किया जाए।

साधारण शब्दों में कहें तो,
न्याय वो व्यवस्था है जो ईश्वर का प्रेम मांगता है।

---

1 मीका 6:8
2 इस निबंध में, "बाइबल" शब्द का मतलब हिब्रू बाइबल (क्रिश्चियन ओल्ड टेस्टामेंट) और क्रिश्चियन न्यू टेस्टामेंट से है
3 गेरी ए. हौगन, गुड न्यूज अबाउट इनजस्टिस, इंटरवर्सिटी प्रेस (1999), पृष्ठ 71 [आगे "हौगन" कहा गया है]।
4 इसे अक्सर प्रतिशोधात्मक जस्टिस (रिट्रिब्यूटिव जस्टिस) या आपराधिक जस्टिस (क्रिमिनल जस्टिस) कहा जाता है।

आज़ादी, ज़िम्मेदारी, बहाली और बदलाव

बाइबल साफ बताती है कि ईश्वर का न्याय इन चार बातों पर निर्भर करता है — आज़ादी (Freedom), ज़िम्मेदारी (Accountability), बहाली (Restoration) और बदलाव (Transformation)।

न्याय का मतलब है शक्ति और अधिकार का सही इस्तेमाल करना ताकि:

I. अन्याय के शिकार लोगों को ज़ुल्म और अत्याचार की स्थिति से आज़ाद किया जाए।
II. जो लोग दूसरों पर ज़ुल्म या अत्याचार करते हैं, उन्हें उनके गलत कामों के लिए ज़िम्मेदार ठहराया जाए।
III. अन्याय के शिकार लोगों को राहत और चंगाई मिले, और जहाँ संभव हो वहाँ अपराधियों को भी समाज में वापस लाने की कोशिश की जाए — सही मुआवज़े और पुनर्वास के ज़रिए।
IV. अन्यायपूर्ण ढाँचों और व्यवस्थाओं को इस तरह बदला जाए कि समाज के लाभ (जैसे सुरक्षा, रोजगार के अवसर, लशिा, और राजनीनतक भागीदारी आदद) सबको बराबरी से लमल सकें।

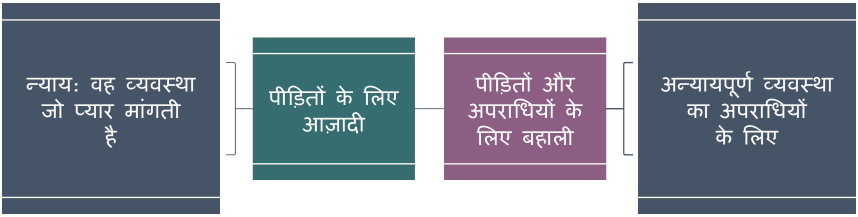

5 "रेस्टोरेटिव जस्टिस (रेस्टोरेटिव जस्टिस)" शब्द क्रिमिनल जस्टिस के क्षेत्र में अधिक इस्तेमाल हो रहा है। इसका मतलब है अपराध के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण, जो पीड़ितों, अपराधियों और उस कम्युनिटी पर ध्यान केंद्रित करता है जहाँ क्राइम हुआ। उदाहरण के लिए, प्रिजन फेलोशिप (Prison Fellowship) का सेंटर फॉर जस्टिस एंड रिकन्सिलीएशन (Center for Justice and Reconciliation) इसे परिभाषित करता है: "एक व्यवस्थित प्रतिक्रिया जो क्रॉन्गडूइंग के कारण या प्रकट हुई चोटों को पीड़ितों, अपराधियों और कम्युनिटीज़ में हीलिंग करने पर जोर देती है।" अधिक जानकारी के लिए देखें: www.restorativejustice.org। इसके अलावा देखें, ज़ेर, चेंजिंग लेंसस (चेंजिंग लेंसस), सेंट्रल मेनोनाइट कमिटी (Central Mennonite Committee) (1999)। ज़ेर का तर्क है कि असली बाइबिल जस्टिस वह है जो "शालोम (शालोम)" प्राप्त करता है, जैसा ओल्ड टेस्टामेंट में परिभाषित है।

6 कुछ लेखकों ने इसे "वितरणात्मक जस्टिस (डिस्ट्रिब्यूटिव जस्टिस)" कहा है। उदाहरण के लिए, स्टीफन चार्ल्स मॉट (Stephen Charles Mott), बाइबिलिक एथिक एंड सोशल चेंज (बाइबिलिक एथिक एंड सोशल चेंज), ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस (Oxford University Press) (1982), पृष्ठ 56 से आगे [आगे "मॉट" कहा गया है]। अधिक जानकारी के लिए देखें, जॉन वारविक मोंटगोमरी (John Warwick Montgomery), ह्यूमन राइट्स एंड ह्यूमन डिग्निटी (ह्यूमन राइट्स एंड ह्यूमन डिग्निटी), प्रोब मिनिस्ट्रीज इंटरनेशनल (Probe Ministries International) (1986) [आगे "मोंटगोमरी" कहा गया है]। मॉट इन शब्दों का इस्तेमाल करते हैं: "प्रतिशोधात्मक जस्टिस (रिट्रिब्यूटिव जस्टिस)"

न्याय के मुख्य हिस्से

प्यार और न्याय

कुछ थियोलॉजिस्ट (धार्मिक विद्वान) मानते हैं कि न्याय सिर्फ जिम्मेदारी (अकाउंटेबिलिटी[4]) या प्रतिशोध (रिट्रिब्यूशन[4]) तक ही सीमित है, और पुनर्स्थापना (रेस्टोरेशन[5]) और बदलाव (ट्रांसफॉर्मेशन[6]) वास्तव में न्याय नहीं बल्कि प्यार का इज़हार हैं। लेकिन Stephen Charles Mott[6] कहते हैं: "न्याय प्यार के विपरीत कोई अलग सिद्धांत नहीं है; बल्कि यह निश्चित कर्तव्य और जिम्मेदारी के रूप में समाज में प्यार का सही जवाब दिखाता है।" प्यार भले ही किसी बुरे समाज में हो, जैसे कि दास समाज (Slave Society), लेकिन अगर समाज की व्यवस्था नहीं बदली, तो प्यार खुद असफल हो जाता है। इसलिए न्याय वह व्यवस्था है जो प्यार मांगती है[8]। जैसा कि नीचे के डायग्राम में दिखाया गया है, न्याय वह व्यवस्था है जो प्यार मांगती है[8], लेकिन प्यार न्याय से भी आगे जाता है[8]।

प्यार कभी भी न्याय से कम नहीं हो सकता, यह हमेशा उससे ज्यादा करता है।[9]

---

7 मॉट पृष्ठ 54। इसके अलावा देखें, रीनहोल्ड नीबुर, क्रिश्चियन रियलिज़्म एंड पॉलिटिकल प्रॉब्लम्स (न्यू यॉर्क, स्क्रिबर्नर'स, 1953), पृष्ठ 167: "अगापे को केवल व्यक्तिगत रिश्तों के प्यार तक सीमित करने और सभी जस्टिस की संरचनाओं और कलाकृतियों को उस क्षेत्र के बाहर रखने का प्रयास, क्रिश्चियन लव को मनुष्य के सामान्य जीवन की समस्या से असंबंधित बना देता है।" सामान्य रूप से देखें, चेस्टर वुड्स, ए बाइबिलिक थियोलॉजी ऑफ जस्टिस (अनपब्लिश्ड मैनुस्क्रिप्ट)।

8 मॉट।

9 मॉट पृष्ठ 250। [डैनियल डे विलियम्स, द स्पिरिट एंड द फॉर्म्स ऑफ लव (न्यू यॉर्क, हार्पर, 1968) से उद्धृत]। 1 कॉरिंथियन्स 13:3 का सारांश इस प्रकार है: "यदि मैं जस्टिस के लिए काम करता हूँ लेकिन मेरे पास लव नहीं है, तो मैं कुछ भी नहीं हूँ।" जब तक पड़ोसी के प्रति सम्मान और प्यार की भावना जस्टिस को प्रेरित नहीं करती, यह क्रिया आध्यात्मिक दृष्टि से खाली है। इसके अलावा, प्यार की क्रियाएँ अक्सर जस्टिस की अपेक्षाओं से भी आगे जा सकती हैं। जहाँ जस्टिस किसी सैनिक से यह अपेक्षा नहीं करती कि वह अपने साथी को बचाने के लिए ग्रेनेड पर अपना शरीर फेंके, वहीं लव उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित कर सकती है। "इससे बड़ा लव किसी का नहीं है कि कोई अपने भाई को बचाने के लिए अपना जीवन दे।" जॉन 15:13

10 "मिशपाट" शब्द का सामान्य अर्थ या तो किसी व्यक्ति के कानूनी निर्णय या कानूनी दावे से है। इसके बहुवचन रूप में यह कानूनों और नियमों को दर्शाता है। (मत्ती 7:9)

बाइबल में **जस्टिस** शब्द का इस्तेमाल बड़े पैमाने पर **रेस्टोरेटिव और ट्रांसफॉर्मेटिव फ़ंक्शन्स** के लिए किया गया है, जो बाइबल में **लव** की अवधारणा के साथ लगातार जुड़े हुए हैं। हिब्रू शब्दों में से, **सेदाक़ाह (sedaqah)** का अर्थ है **उपहार, भरपूरता** और **उदारता,** और **मिस्पत (mispat)**[10] भी अक्सर **राहत, मुक्ति** और **डिलिवरेंस** का अर्थ देता है[11]। इसके अलावा, पवित्र शास्त्र में दिए गए **रिस्टिट्यूशन (restitution) के सिद्धांत** ईश्वर की **चिंता (concern) को दर्शाते हैं** कि **पीड़ितों और अपराधियों दोनों की बहाली (restoration) हो**[12]। बहाली और ट्रांसफॉर्मेशन से जुड़े कानूनों के कुछ बेहतरीन उदाहरण पवित्र शास्त्र में **मोज़ाइक लेजिसलेशन (Mosaic legislation)** में दिखाई देते हैं, जैसे **येर ऑफ जुबिली (Year of Jubilee)** और **सैबथ ईयर (Sabbath Year)**[13]। प्राचीन इज़राइल के **एग्रीरियन सोसाइटी (agrarian society)** में जमीन संपत्ति उत्पन्न करने का मूल साधन थी। जमीन की शुरुआत में **बराबरी से बाँटी गई थी**। उसके बाद, प्रत्येक परिवार जमीन का उपयोग कर सकता था या दूसरों को उसके उपयोग के लिए ट्रांसफर कर सकता था, लेकिन हर पचास साल के अंत में **सारी जमीन मूल मालिकों को वापस लौटानी थी**[14]। इस कानून ने सुनिश्चित किया कि संपत्ति के साधन केवल कुछ लोगों के हाथ में केंद्रित न हों। इसके बजाय, **संपत्ति के साधन हर 50 साल के अंत में प्रत्येक परिवार को बहाल किए जाते थे**। इसी तरह, प्राचीन इज़राइल में **रेस्टोरेटिव और ट्रांसफॉर्मेटिव जस्टिस के सिद्धांत** के अनुसार, सात साल के अंत में **ऋण (debts) माफ किए जाते थे, बलपूर्वक श्रम (forced labour)** समाप्त किया जाता था और हिब्रू **कॉन्ट्रैक्ट लेबर्स (Hebrew contract labourers)** को **हायर सर्वेंट्स (hired servants)** माना जाता था तथा **छह साल सेवा के बाद उन्हें उनके कॉन्ट्रैक्ट से मुक्त किया जाता था**[15]। इन सिद्धांतों ने सुनिश्चित किया कि व्यक्ति **अनंत दासता या ऋण के चक्र में फँस न जाए**, बल्कि **मेहनत के माध्यम से अपने और अपने परिवार के लिए समृद्ध जीवन के साधनों तक पहुँच प्राप्त कर सके**।

---

11 मत्ती 6:8; 23:6 — बाइबल में “न्याय” (Justice) की भाषा हमेशा अंग्रेज़ी पाठक को तुरंत स्पष्ट नहीं होती, क्योंकि “धार्मिकता” (righteousness) और “न्याय” (judgment) जैसे शब्दों की अस्पष्टता होती है। नीचे दिया गया चार्ट “Justice” शब्द से जुड़े हिब्रू और यूनानी (Greek) शब्दों का प्राथमिक अर्थ दिखाता है। मूल शब्द

भाषा	मूल शब्द	अंग्रेज़ी बाइबल में अनुवाद
हिब्रू	Tsdqah (त्सदकाह) Mishpat (मिश्पाट)	Righteousness, justice (धार्मिकता, न्याय) Justice, judgment (न्याय, निर्णय)
यूनानी	Dikaiosyne (दिकायोस्युने) Krima (क्रिमा) Krisis (क्रिसिस)	Righteousness, justice (धार्मिकता, न्याय) Judgment, decision, justice (निर्णय, न्याय) Judgment, justice (निर्णय, न्याय)

आम तौर पर, जब righteousness या judgment का उपयोग सामाजिक उत्तरदायित्व या उत्पीड़न के संदर्भ में किया जाता है, तो इसका बेहतर अनुवाद justice (न्याय) के रूप में होता है। (देखें Haugann et al. “In the Old Testament [Hebrew Bible]” — हिब्रू बाइबल में justice और righteousness शब्द लगभग समानार्थी हैं, जो दोनों ही ईश्वर के नियमों के अनुरूपता को दर्शाते हैं।)

संदर्भ:
यशायाह 5:6–8; 26:1–16
लैव्यव्यवस्था 25:8–55
व्यवस्थाविवरण 24:6; 25:13–16

बाइबिलिक ड्यूटीज और ह्यूमन राइट्स

जस्टिस के सिद्धांत, जो फ्रीडम, अकाउंटेबिलिटी, रेस्टोरेशन और ट्रांसफॉर्मेशन से जुड़े हैं और बाइबल में प्रस्तुत किए गए हैं, ईश्वर के मानकों को स्थापित करते हैं कि समाज को सही तरीके से कैसे व्यवस्थित किया जाए और ये ह्यूमन राइट्स के विचार की ओर ले जाते हैं। जैसा कि मॉट बताते हैं:

हालाँकि बाइबल में "ह्यूमन राइट्स" नाम का कोई ड्यूटीज का कैटलॉग नहीं है, यह जस्टिस के दावे (claims) प्रकट करती है जो प्रत्येक कम्युनिटी के सदस्य के लिए राइट्स के रूप में कार्य करते हैं; कुछ अनुवाद कभी-कभी जस्टिस टर्मिनोलॉजी को राइट्स के रूप में अनुवादित करते हैं (उदाहरण के लिए, यिर्मयाह 5:28: "वे जरूरतमंदों के राइट्स [मिस्पत] की रक्षा नहीं करते," आरएसवी)।

बाद की प्रैक्टिस, जिसमें ह्यूमन राइट्स को एक कैटलॉग या बिल में निर्दिष्ट किया गया, एक महत्वपूर्ण विकास है, क्योंकि यह स्पष्ट रूप से सामाजिक संबंधों में स्वीकृत न्यूनतम (minimum) को पहचानता है[16]।

ये दावे जस्टिस का ताना-बाना हैं, जो वह व्यवस्था परिभाषित करते हैं जो प्यार मांगती है[17]। ये राइट्स ईश्वर के खिलाफ दावे नहीं हैं, बल्कि अन्य मनुष्यों के खिलाफ दावे हैं, जो सभी मानवता के लिए ईश्वर के प्यार पर आधारित हैं[18]।

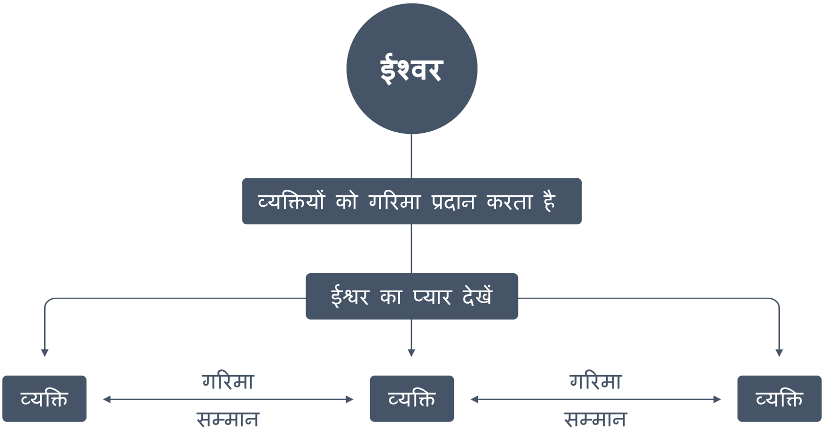

क्योंकि ईश्वर (GOD) प्रत्येक व्यक्ति को गरिमा (dignity) प्रदान करते हैं, समाज में प्रत्येक व्यक्ति (व्यक्तिगत रूप से और संस्थानों के माध्यम से सामूहिक रूप से) का कर्तव्य है कि वह सभी व्यक्तियों के साथ गरिमा और सम्मान (respect) के साथ पेश आए, और व्यक्तियों का ऐसा व्यवहार पाने का अधिकार (right) भी बनता है[19]। जस्टिस (justice) के संदर्भ में, ये कर्तव्य सरकार (government) के साथ-साथ उन व्यक्तियों और निजी संस्थाओं पर भी लागू होते हैं, जिनके पास यह सुनिश्चित करने की क्षमता होती है कि ये अधिकार वास्तविक रूप में लागू हों। जॉन वारविक मोंटगोमरी (John Warwick Montgomery) ने बताया है:

“यदि सर्वशक्तिमान ईश्वर (God Almighty) घोषित करते हैं—जैसा कि उन्होंने शास्त्रों में किया है—कि विधवाओं, अनाथों, हाशिए पर पड़े लोगों और दबाए गए लोगों का ख्याल अधिक भाग्यशाली लोगों द्वारा रखा जाना चाहिए—तो इनसे जुड़े अधिकार स्पष्ट रूप से निश्चित होते हैं और संबंधित कर्तव्य उन सभी पर आते हैं जो मदद करने की स्थिति में हैं।”[20]

चूंकि अधिकार (rights) संबंधित कर्तव्यों (duties) से उत्पन्न होते हैं, इसलिए ह्यूमन राइट्स (human rights) शास्त्रों से प्राप्त किए जा सकते हैं यदि हम बाइबल में समाज की व्यवस्था से जुड़े कर्तव्यों की जांच करें। ये कर्तव्य और उनके संबंधित अधिकारों में राजनीतिक अधिकार (political rights), सुरक्षा अधिकार (security rights) और आर्थिक/सामाजिक ह्यूमन राइट्स (economic/social human rights) शामिल हैं, जैसा कि संलग्न एग्ज़िबिट्स (exhibits) में विस्तार से दिखाया गया है। उदाहरण के लिए, राजनीतिक क्षेत्र में, व्यवस्थाविवरण 16:18 (Deut. 16:18) कहता है: “न्याय को विकृत न करो और पक्षपात न दिखाओ।” और आमोस 5:12 (Amos 5:12) कहता है: “गरीबों को न्याय से वंचित न करो।” इन और अन्य पदों से स्पष्ट है कि बाइबिल में अदालतों में निष्पक्षता और उचित प्रक्रियाओं (fair procedures) का कर्तव्य है, चाहे आर्थिक या अन्य स्थिति कुछ भी हो। संबंधित अधिकार है न्यायिक प्रक्रिया (due process) और अदालत में निष्पक्ष प्रक्रियाओं का अधिकार (right to fair procedures before the court)।

---

16 मॉट पृष्ठ 52।

17 “परिभाषित और स्वीकार किए गए अधिकार (Defined and acknowledged rights) जस्टिस का एक अनिवार्य तत्व हैं।” मॉट पृष्ठ 53। सामान्य रूप से देखें, मोंटगोमरी। इसके अलावा देखें, वुड्स, अध्याय 2, जिसमें उत्पत्ति 2 (Genesis 2) पर चर्चा की गई है। “ईश्वर की दृष्टि में संपूर्ण मानवता राजसी है। पूरी मानवता ईश्वर से जुड़ी है, केवल राजा से नहीं। इस तरह की समझ यह आधार प्रदान करती है कि ईश्वर का इरादा यह है कि सभी मनुष्यों के पास ईश्वर के सामने अधिकार हों और इसलिए समाज में भी।”

18 मॉट से रूपांतरित।

19 मॉट पृष्ठ 53। इसी समय, व्यक्तियों पर समाज के प्रति कुछ कर्तव्य भी होते हैं (उदाहरण के लिए, काम करने का कर्तव्य—यदि सक्षम हों, 2 थेस्सलोनियन्स 3:10; और शासक प्राधिकरणों के अधीन रहने का कर्तव्य, रोमन्स 13:1)।

20 मोंटगोमरी पृष्ठ 173। यह वही तर्क है जिसे नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन ने अपनी पुस्तक डेवलपमेंट ऐज़ फ्रीडम (Development as Freedom) (रैंडम हाउस, इंक.) 1999 [आगे “सेन” कहा गया] में प्रस्तुत किया है। जैसा कि सेन बताते हैं, यह सवाल उठाते हुए कि यदि अधिकारों को संबंधित कर्तव्यों के साथ नहीं जोड़ा गया तो कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है कि अधिकार वास्तविक रूप में लागू हों, “हालाँकि यह किसी विशेष व्यक्ति का विशिष्ट कर्तव्य नहीं हो सकता कि वह सुनिश्चित करे कि व्यक्ति के अधिकार पूरे हों, पर ये दावे सामान्य रूप से उन सभी को संबोधित किए जा सकते हैं जो मदद करने की स्थिति में हैं।” सेन पृष्ठ 230। इसके अलावा देखें, यूनाइटेड नेशन डेवलपमेंट प्रोग्राम, ह्यूमन डेवलपमेंट रिपोर्ट 2000 (Oxford University Press) (2000) पृष्ठ 19-26।

सुरक्षा के क्षेत्र में, बाइबल सिखाती है कि बलपूर्वक श्रम या गुलामी करने से बचना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।

12 “यदि तुम्हारे लोगों में से कोई, हिब्रू स्त्री व पुरुष, तुम्हारे हाथ बेचा जाए तो उस व्यक्ति
को तुम्हारी सेवा छः वर्ष करनी चाहिए। तब सातवें वर्ष तुम्हें उसे अपने से स्वतन्त्र कर
देना चाहीए। 13 किन्तु जब तुम अपने दास को स्वतन्त्र करो तो उसे बिना कुछ लिए मत
जाने दो। 14 तुम्हें उस व्यक्ति को अपने रेवड़ों का एक बड़ा भाग, खलिहान से एक बड़ा
भाग और दाखमधु से एक बड़ा भाग देना चाहिए। यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें बहुत
अच्छी चीज़ों की प्राप्ति का आशीर्वाद दिया है। उसी तरह तुम्हें भी अपने दास को बहुत सारी
अच्छी चीज़ें देनी चाहिए। 15 तुम्हें याद रखना चाहिए कि तुम मिस्र में दास थे। यहोवा
तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें मुक्त किया है। यही कारण है कि मैं तुमसे आज यह करने को कह
रहा हूँ।

संबंधित अधिकार यह है कि प्रत्येक व्यक्ति ऐसे बलपूर्वक श्रम और दासता से मुक्त रहने का अधिकार रखता है।

आर्थिक और सामाजिक अधिकारों के मामले में, जुबिली वर्ष और छैबीस वर्ष के नियम यह कहते हैं कि सभी लोगों को उत्पादन के साधनों तक पहुँच मिलनी चाहिए। इसका मतलब है कि हर व्यक्ति को अपने और अपने परिवार के लिए अच्छा जीवन जीने का अधिकार होना चाहिए। यह अधिकार पाने के लिए हर व्यक्ति की अपनी जिम्मेदारी भी है, क्योंकि यह केवल उत्पादन के साधनों तक पहुँच का मौका देता है। जैसा कि थेस्सलोनियन्स 3:10 में लिखा है:

"अगर कोई काम नहीं करेगा, तो उसे खाने का अधिकार नहीं है।" इसलिए, न्याय (justice) वह व्यवस्था है जो ईश्वर के प्यार (God's love) के अनुसार चलती है। इसमें शामिल हैं:

1. प्रतिशोध (retributive) – जो लोग दूसरों के ईश्वर-प्रदत्त अधिकारों का उल्लंघन करते हैं, उन्हें जवाबदेह बनाना।
2. पुनर्स्थापना (restorative) – अन्याय के पीड़ितों को समाज में ऐसी जगह देना जहाँ उन्हें राहत और हीलिंग मिले, और संभव हो तो अपराधियों को भी सही तरीके से समाज में वापस लाना।
3. परिवर्तन (transformative) – समाज की गलत और अन्यायपूर्ण व्यवस्थाओं को बदलना, ताकि हर व्यक्ति अपने जीवन, गरिमा, स्वतंत्रता और अपने काम के फल का आनंद ले सके।

ईश्वर हमें बुलाते हैं कि हम अन्याय के पीड़ितों के लिए हस्तक्षेप करें और पवित्र आत्मा की शक्ति से उन क्षेत्रों में न्याय की खोज और स्थापना करें जहाँ हम अपनी शक्ति और अधिकार का प्रयोग करते हैं।

जैसा कि भविष्यवक्ता आमोस (Amos) ने कहा है, हमें बुलाया गया है कि:

“न्याय एक नदी की तरह बहने दो,

धर्म एक कभी न सूखने वाली धारा की तरह!”[21]

अधिक जानकारी के लिए कि आप अन्याय झेल रहे लोगों की मदद कैसे कर सकते हैं,

जस्टिस वेंचर्स इंटरनेशनल (Justice Ventures International) से संपर्क करें:

info@justiceventures.org या हमारी वेबसाइट देखें: www.justiceventures.org

21 Amos 5 24

बाइबल के कर्तव्यों से बने मानव अधिकार

राजनीतिक

कर्तव्य	**मानव अधिकार**	**संबंधित अनुच्छेद -सार्वभौमिक घोषणा पत्र मानव अधिकार** (Universal Declaration of Human Rights)
कानून के शासन के अधीन रहने का कर्तव्य – रोमन्स 13:1, व्यवस्थाविवरण 17:18-20, 1 पतरस 2:13-14 **कानून तोड़ने वालों को दंड देने और नागरिकों के साथ न्याय करने का कर्तव्य** – रोमन्स 13:4 **न्यायिक कार्यवाहियों में व्यक्तियों के साथ निष्पक्ष व्यवहार करने का कर्तव्य** – निर्गमन 12:49, लेवीय 23:22, 24:22, गिनती 9:14, 15:15-16 **कर (taxes) देने का कर्तव्य** – रोमन्स 13:1	**कानून के सामने समान व्यवहार का अधिकार सरकार में भाग लेने का अधिकार (जैसे, कानून बनाने में भाग लेने का अधिकार)**	**अनुच्छेद 6** **अनुच्छेद 7**
सुनिश्चित करने का कर्तव्य कि हर किसी को कानूनी प्रणाली तक पहुँच मिले और निष्पक्ष न्याय मिले – निर्गमन 23:6,8; लेवीय 19:14-15; व्यवस्थाविवरण 1:17, 10:17-18, 16:18-20, 17:8-13, 19:15-21 **सच्चा और सही गवाही देने का कर्तव्य** – निर्गमन 20:16; व्यवस्थाविवरण 5:20; निर्गमन 23:1-3; लेवीय 19:16; व्यवस्थाविवरण 19:15-21 **पीड़ितों को पुनर्स्थापना (restitution) देने का कर्तव्य** – निर्गमन 22:1-14	**कानूनी सेवाओं तक पहुँच का अधिकार (अपराध और दीवानी मामलों में मुकदमेबाजी और लेन-देन संबंधी कानूनी सेवाओं का अधिकार)** **न्यायिक प्रक्रिया का अधिकार (न्यायपूर्ण कानूनी प्रक्रिया का अधिकार)**	**अनुच्छेद 10** **अनुच्छेद 11**
व्यक्तियों को विचार, अंतरात्मा और धर्म की स्वतंत्रता देने का कर्तव्य – यूहन्ना 7:17, रोमन्स 14, प्रकाशितवाक्य 3:20	अधिकारों के उल्लंघन के लिए प्रभावी कानूनी समाधान का अधिकार	**अनुच्छेद 8**
व्यक्तियों को विचार, अंतरात्मा और धर्म की स्वतंत्रता देने का कर्तव्य – यूहन्ना 7:17, रोमन्स 14, प्रकाशितवाक्य 3:20		

सुरक्षा

कर्तव्य	मानव अधिकार	संबंधित अनुच्छेद - सार्वभौमिक घोषणा पत्र मानव अधिकार (Universal Declaration of Human Rights)
व्यक्तियों को शारीरिक हानि से मुक्त और सुरक्षित रखने का कर्तव्य - निर्गमन 20:13, व्यवस्थाविवरण 5:17, निर्गमन 21:16-21, 26-31, लेवीय 19:14, व्यवस्थाविवरण 24:7, 27:18 **कर (taxes) देने का कर्तव्य** – रोमन्स 13:1	जीवन, स्वतंत्रता और व्यक्तिगत सुरक्षा का अधिकार	**अनुच्छेद 3**
जबरन श्रम/गुलामी **करने से बचने का कर्तव्य** – निर्गमन 21:2, 5-6; लेवीय 25; व्यवस्थाविवरण 15:12-18, 24:	जबरन श्रम/गुलामी	**अनुच्छेद 4**
अत्यधिक या अमानवीय दंड देने से बचने का कर्तव्य – व्यवस्थाविवरण 25:1-5	यातना या क्रूर, अमानवीय या अपमानजनक व्यवहार या दंड से मुक्त रहने का अधिकार	**अनुच्छेद 5**
मनमानी पुलिस कार्रवाई और हिरासत से बचने का कर्तव्य – व्यवस्थाविवरण 19:15-19	मनमानी गिरफ्तारी, हिरासत या निर्वासन से मुक्त रहने का अधिकार	**अनुच्छेद 9**
प्रत्येक व्यक्ति की संपत्ति को चोरी या अन्य किसी नुकसान से सुरक्षित रखने का कर्तव्य – निर्गमन 20:15, व्यवस्थाविवरण 5:19, निर्गमन 21:33-36, 22:1-15, 23:4-5, लेवीय 19:35-36, व्यवस्थाविवरण 22:1-4, 25:13-15	संपत्ति की सुरक्षा का अधिकार	**अनुच्छेद 17**
विवाह और पारिवारिक संबंधों को बनाए रखने का कर्तव्य – निर्गमन 20:14, व्यवस्थाविवरण 5:18, लेवीय 18:6-23, 20:10-21, व्यवस्थाविवरण 22:13-30, इफिसियों 5:22-33, लेवीय 20:1-3 **पति/पत्नी, बच्चों और अन्य परिवारजनों की देखभाल और आवश्यकताएँ पूरी करने का कर्तव्य** – 1 तीमुथियुस 5:8	विवाह करने का अधिकार और पारिवारिक संबंधों में दुरुपयोग से मुक्त रहने का अधिकार	**अनुच्छेद 16**
यौन शोषण (sexual exploitation) से बचने का कर्तव्य – लेवीय 18:6-23, 19:29, 20:10-21, व्यवस्थाविवरण 22:13-30, 23:17-18	*यौन शोषण से सुरक्षा का अधिकार*	**अनुच्छेद 3** **अनुच्छेद 4**

आर्थिक और सामाजिक

कर्तव्य	मानव अधिकार	संबंधित अनुच्छेद - सार्वभौमिक घोषणा पत्र मानव अधिकार (Universal Declaration of Human Rights)
सभी नागरिकों को उत्पादन के साधनों तक पहुँच देने का कर्तव्य – लेवीय 25:25-28, 36-36, यहेजकेल 47:14, मीका 4:4, व्यवस्थाविवरण 15:4, 1 राजा 21, यशायाह 65:21-22, गिनती 26, व्यवस्थाविवरण 24:6	आर्थिक उत्पादन के साधनों तक पहुँच का अधिकार (जिसमें पूंजी तक पहुँच, जैसे भूमि, शेयर, ऋण; जानकारी तक पहुँच; प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता तक पहुँच; कानूनी सेवाओं तक पहुँच ताकि पूंजी, श्रम और जानकारी का संगठन, सक्रियण और सुरक्षा किया जा सके; और स्वतंत्र रूप से व्यापार करने की क्षमता शामिल है)।	अनुच्छेद 25
काम करने का कर्तव्य – निर्गमन 20:8, 2 थेस्सलोनियन्स 3:1-13 कर्मचारियों के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करने का कर्तव्य आराम करने का और अपने अधिकार में काम करने वालों के लिए आराम सुनिश्चित करने का कर्तव्य – निर्गमन 20:8-11, व्यवस्थाविवरण 5:12-15, निर्गमन 23:12, लेवीय 19:13, व्यवस्थाविवरण 24:14, 25:4, याकूब 5:1-5	काम करने का अधिकार और काम की न्यायपूर्ण परिस्थितियों का अधिकार (जिसमें समान काम के लिए समान वेतन, सुरक्षित कार्यस्थल और समय-समय पर आराम शामिल हैं, लेकिन इन्हीं तक सीमित नहीं हैं)।	अनुच्छेद 23 अनुच्छेद 24
गरीबों और समाज के अन्य कमजोर लोगों की देखभाल करने का कर्तव्य, जैसे कि उन्हें बुनियादी भोजन, आश्रय, स्वास्थ्य सेवा, सुरक्षा और अन्य सार्वजनिक/सामुदायिक सेवाएँ प्रदान करना – लेवीय 19:9-10, 23:2 2, व्यवस्थाविवरण 14:28-29, 15:4, 11, 24:6, 19-22, यशायाह 58, निर्गमन 23:11	स्वयं और अपने परिवार के स्वास्थ्य और भलाई के लिए पर्याप्त जीवन स्तर का अधिकार (जिसमें बुनियादी भोजन, आश्रय/घर, स्वास्थ्य सेवा, सुरक्षा और अन्य बुनियादी सामुदायिक/सार्वजनिक सेवाओं तक पहुँच शामिल है)। नोट: यह अधिकार व्यक्ति के काम करने के कर्तव्य द्वारा सीमित है।	अनुच्छेद 25 अनुच्छेद 29

व्यक्तियों को ईश्वर और संसार के बारे में शिक्षा देने का कर्तव्य – व्यवस्थाविवरण 6:7, 11:19, मत्ती 28:18-20 (साथ ही, अन्य कर्तव्यों/अधिकारों से संबंधित बाइबिल संदर्भ भी देखें, जैसे कि शिक्षा का कर्तव्य उत्पादन के साधनों तक पहुँच सुनिश्चित करने, धर्म की स्वतंत्रता और अन्य कर्तव्यों में निहित है)।	शिक्षा का अधिकार (विशेषकर उन जानकारियों/ज्ञान के संबंध में जो अन्य अधिकारों का उपयोग या प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक हैं)	अनुच्छेद 26
प्रत्येक व्यक्ति की संपत्ति को चोरी या अन्य किसी नुकसान से सुरक्षित रखने का कर्तव्य – निर्गमन 20:15, व्यवस्थाविवरण 5:19, निर्गमन 21:33-36, 22:1-15, 23:4-5, लेवीय 19:35-36, व्यवस्थाविवरण 22:1-4, 25:13-15	संपत्ति की सुरक्षा का अधिकार	अनुच्छेद 17
विवाह और पारिवारिक संबंधों को बनाए रखने का कर्तव्य – निर्गमन 20:14, व्यवस्थाविवरण 5:18, लेवीय 18:6-23, 20:10-21, व्यवस्थाविवरण 22:13-30, इफिसियों 5:22-33, लेवीय 20:1-3 पति/पत्नी, बच्चों और अन्य परिवारजनों की देखभाल और आवश्यकताएँ पूरी करने का कर्तव्य – 1 तीमुथियुस 5:8	विवाह करने का अधिकार और पारिवारिक संबंधों में दुरुपयोग से मुक्त रहने का अधिकार	अनुच्छेद 16

JVI
के बारे में

मिशन (Misson):

JVI का मिशन है कि गरीबों और अन्याय झेल रहे लोगों के लिए स्वतंत्रता, न्याय और पुनर्स्थापना सुनिश्चित की जाए, और उन पहलों को मजबूत किया जाए जो न्याय को बढ़ावा देती हैं।

दृष्टि (Vision):

हमारी दृष्टि यह है कि अन्यायपूर्ण समुदायों को ईश्वर के प्रेम के मानक के अनुसार व्यवस्थित समुदायों में बदलते हुए देखें।

दृष्टि (Vision):

हम अपनी क्रिश्चियन पहचान बनाए रखते हैं, और साथ ही अन्य क्रिश्चियन और अलग विश्वास रखने वाले लोगों के साथ मिलकर न्याय के सामान्य उद्देश्य के लिए काम करते हैं। हम गरीबों और अन्याय झेल रहे लोगों की सेवा के लिए बुलाए गए हैं, और हर व्यक्ति की अद्वितीयता, गरिमा और आंतरिक मूल्य में विश्वास रखते हैं।

हम सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करते हैं और विभिन्न संस्कृतियों के समाज में योगदान को मानते हैं।

हम अपने स्थानीय साझेदारों में निवेश करते हैं, अन्याय से लड़ने के लिए पूंजी जुटाते हैं।

हम अंतरराष्ट्रीय साझेदारी बनाते हैं, स्वयंसेवकों और अन्य संगठनों के साथ मिलकर, ताकि स्थानीय न्याय पहलों पर वैश्विक विशेषज्ञता का लाभ लिया जा सके और उनका प्रभाव बढ़ाया जा सके।

शामिल हों
(Get Involved):

दान करें (Give):

हमारे काम का समर्थन करके स्वतंत्रता, न्याय और पुनर्स्थापना में निवेश करें। अधिक जानने के लिए हमारी वेबसाइट देखें।

जुड़ें (Connect):

हमारी दृष्टि यह है कि अन्यायपूर्ण समुदायों को ईश्वर के प्रेम के मानक के अनुसार व्यवस्थित समुदायों में बदलते हुए देखें।

सेवा करें (Serve):

अपनी क्षमताओं का उपयोग करके हमारे साथ साझेदारी करें। स्वयंसेवक के रूप में हमारी वेबसाइट पर पंजीकरण करें।

संपर्क करें
(Contact Us):

फोन: (202) 657-5225
ईमेल: info@justiceventures.org
वेबसाइट: www.justiceventures.org
पता: P.O. Box 2834, Washington, D.C.
20013-2834